

प्र० 20  
पाठ

ठेबे थाउ एवे  
तेबे आउ एवे

सुजाता : अन्ना, नमस्कार। आपण कूआड़े याउच्छुन्हि कि ?

अन्ना : मूँ एउ बस्थ श्वाशुन्हु  
याउच्छु। तु कूआड़े येच्छु  
किलो सुजाता?

सुजाता : रेभेन्सा कलेजरे आजि  
मोर एम.ए. परीक्षा।  
मूँ कचक याउच्छु।

अन्ना : तु परा मास्क्राणी हेल्लुणि।  
पूणि परीक्षा उच्छ्व क'श ?

सुजाता : यदि चाकिरी करि परीक्षा  
देली, ठेबे क'श किट्ठु  
शराप हेला ?

अन्ना : नाइँलो दैथ, उल कथा।  
एबेत कलेज छुट्टु पूचिला  
उलि खोला हेलाणि। आमे  
येतेबेले पछुथिल,  
येतेबेले एठारे मात्र  
रेभेन्सा कलेज शोषिए  
थिला।

सुजाता : अन्ना, आपण क'श उक्कल

तब और अब

सुजाता : नानाजी नमस्कार। आप कहाँ जा  
रहे हैं ?

नाना : मैं इस बस स्टैंड को जा रहा हूँ।  
लाडली सुजाता, तू कहाँ जाएगी ?

सुजाता : रेभेन्सा कॉलेज में आज मेरी  
एम.ए.की परीक्षा है। मैं कटक जा  
रही हूँ।

नाना : तु मास्टरानी (अध्यापिका) हो गयी  
हो। तो फिर परीक्षा क्यों दे रही हो ?

सुजाता : यदि मैंने नौकरी के साथ-साथ  
परीक्षा दी, तब क्या कुछ बुरा हुआ ?

नाना : नहीं बिटिया, अच्छी बात है। अब तो  
कॉलेज छत्रक की भाँति खुल गए  
हैं। हम जब पढ़ते थे, तब यहाँ  
रेभेन्सा कॉलेज एक ही कॉलेज था।

सुजाता : नानाजी, क्या आप ने उत्कल विश्व  
विद्यालय से परीक्षा दी थी ?

- बिशुबिद्यालयूरे परीक्षा  
देजथिले?
- अना : आलो, उन्हल बिशुबिद्यालयू  
थिला केउँ ? आजि  
येउँ तुम बिशुबिद्यालयू,  
ऐति त ज्ञाल थिला। आमे  
पाठशा बिशुबिद्यालयूरे  
परीक्षा देजथिलू।
- सुजाता : अना, येतेबेले ईथ  
पिला आपशक्क थाङ्गरे  
पछुथिलेना ?
- अना : आजि येते ईथ पछुचुन्नि,  
येतेबेले येते  
पछुनथिले।
- सुजाता : आपश येबे चाकिरा  
करिथिले, येबे दरमा  
केते थिला ?
- अना : मूँ कहिले तु क'श बिशुष  
करिबू ? पठाण टङ्गारे  
मोर पहिलू चाकिरा आरम्  
ह्रोझथिला। तु एवे केते  
दरमा पाउच्छु ?
- सुजाता : एवे मो दरमा ३०००  
टङ्गा। ता' उपरे महुङ्गा  
उभा अहि।
- अना : पठकार एते गुढाए  
पछसा देउच्छु। किन्तु पढा
- नाना : बिटिया, तब उत्कल विश्व विद्यालय  
ही कहाँ था? आज जहाँ तुम्हारा  
विश्वविद्यालय है, वहाँ एक जंगल  
था। हम ने पटना विश्वविद्यालय से  
परीक्षा दी थी।
- सुजाता : नाना, क्या उस समय लड़कियाँ भी  
आपके साथ पढ़ती थीं ?
- नाना : अब जितनी लड़कियाँ पढ़ रही हैं,  
तब उतनी लड़कियाँ नहीं पढ़ती थीं।
- सुजाता : जब आप नौकरी करते थे, तब वेतन  
कितना था?
- नाना : मैं कहूँ तो क्या तु विश्वास करेगी?  
पचास रुपयों से मेरी पहली नौकरी  
शुरू हुई थी। तू अभी कितना वेतन  
पा रही हो?
- सुजाता : अभी मेरा वेतन ३००० रुपए हैं। उस  
के अतिरिक्त महँगाई भत्ता भी है।
- नाना : सरकार इतना पैसा दे रहा है;  
लेकिन पढ़ाई ठीक-ठीक नहीं हो  
रही है। बच्चे हर समय (हमेशा)  
ट्यूशन पर निर्भर रहते हैं।
- सुजाता : आप ने कहा कि पचास रुपयों से  
आप ने नौकरी शुरू की थी। अब

ଠିକ୍ ଠିକ୍ ହୋଇ ପାରୁନାହିଁ ।  
ପିଲାମାନେ ସବୁବେଳେ ଟୁୟସନ୍  
ଉପରେ ନିର୍ଭର କରୁଛନ୍ତି ।

ସୁଜାତା : ଆପଣ କହିଲେ ପରା ପଚାଶ  
ଟଙ୍କାରେ ଆପଣ ଚାକିରୀ  
ଆରମ୍ଭ କରିଥିଲେ । ଏବେ  
ଆମେ ଯେତେ ପାଇଲେ ବି  
ସେତେ ନିଅଣ୍ଟ ।

ଅନ୍ଧା : କଥାଟା ଢାହା ନୁହିଁ ।  
ସେତେବେଳେ ଯେଉଁମାନେ  
ପାଠ ପଡ଼ାଉଥିଲେ, ସେମାନେ  
ଶିକ୍ଷାଦାନକୁ ପବିତ୍ର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ  
ବୋଲି ଭାବୁଥିଲେ । ଆଜି  
ସେଇ କର୍ତ୍ତବ୍ୟବୋଧ ନାହିଁ,  
କିମ୍ବା କର୍ତ୍ତବ୍ୟବୋଧ ସାଥେ  
ଶିକ୍ଷା ଢାନର ପରିବେଶ  
ନାହିଁ । ଯେତେଦୂର ମୁଁ ଗୁଡ଼ିଛି  
ସେତେଦୂର ଟିଉସନ୍ ହିଁ ଆଜି  
ଶିକ୍ଷାକୁ ବ୍ୟବସାୟିକ  
କରିଦେଲା ।

ସୁଜାତା : ଅନ୍ଧା, ଆପଣ ଯୋଉ କଥା  
କହୁଛନ୍ତି, ମୋର ବି ସେଥିରେ  
ଏକମତ । ଆପଣ କ'ଣ  
କହୁଛନ୍ତି ଶିକ୍ଷାର ସୁର  
ଅଧୋଧପତନ ପାଇଁ ଖାଲି  
କ'ଣ ଶିକ୍ଷକ ଦାୟୀ?

ଅନ୍ଧା : କେବଳ ଶିକ୍ଷକ ନୁହନ୍ତି,  
ଆମର ଶିକ୍ଷା ବ୍ୟବସ୍ଥା ଓ

ହମ ଜିତନା ପାତେ ହଁ, ଉତ୍ତନା ହି କମ  
ହି ।

ନାନା : ଯହ ବାତ ନହିଁ ହଁ । ତସ ସମ୍ୟ ଜୋ  
ଶିକ୍ଷା ଦେତେ ଥେ ବେ ଶିକ୍ଷଣ କୋ ପଵିତ୍ର  
କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ସମଜ୍ଞତେ ଥେ । ଆଜ ଵହ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ  
ବୌଧ ନହିଁ ହଁ ଯା (ଆଜକଳ) କର୍ତ୍ତବ୍ୟ  
ବୌଧ ହୋନେପର ଭୀ ପଢାନେ କା ଵାତାଵରଣ  
ନହିଁ ହଁ । ଜାହାଁ ତକ ମେଁ ସମଜ୍ଞତା ହୁଁ  
ବହାଁ ତକ ଟ୍ୟୁଶନ ନେ ଶିକ୍ଷା କୋ  
ବ୍ୟବସାୟିକ ବନା ଦିଯା ହଁ ।

ସୁଜାତା : ନାନା, ଜୋ ଆପ କହ ରହେ ହଁ, ମେଁ ଭୀ  
ତସସେ ସହମତ ହୁଁ । କ୍ୟା ଆପ କହ ରହେ  
ହଁ କି ଶିକ୍ଷା କୀ ଗିରାଵଟ କେ ଲିଏ  
ଶିକ୍ଷକ ଅକେଲେ ହୀ ଉତ୍ତରଦାୟୀ ହଁ?

ନାନା : ନହିଁ, ଇସକେଲିଏ କେଵଳ ଶିକ୍ଷକ ହି  
ନହିଁ, ହମାରୀ ଶିକ୍ଷା ବ୍ୟବସ୍ଥା ଔର  
ଅଭିଭାବକ ଭୀ ଉତ୍ତରଦାୟୀ ହଁ ।

ସୁଜାତା : ନାନା ଦେଖିଏ, ବାତୋ-ବାତୋ ମେଁ ସମ୍ୟ  
ନିକଲ ଗ୍ୟା । ହମାରେ ପହୁଁଚାତେ ହି ଗାଢ଼ୀ  
ଭୀ ଆ ଗ୍ୟା ।

ନାନା : ଅଚ୍ଛା, ଜବ ତୁ ରେଭେନ୍ସା କୋଲେଜ କେ

अरिभावकमाने बि एथिपाइँ  
दायू ।

सुजाता : अजा देखन्हू, कथा कथारे  
समयू चालिगला । ह्वेइ

आमे पहुँचीवा मात्रे गाडि  
मध्य आसिगलाणी ।

अजा : आळा, येतेवेले तु  
रेभेन्था कलेजिर  
हृष्टेलकु यिरु तेबे  
आमर नातुणा जानकीकु  
देखा करिबु, यदि समयू  
मिलिब ।

सुजाता : निश्चयू अजा । आपश याहा  
कहिके ताहा मुँ करिबि ।  
मुँ एबे याइपारेकि ?

अजा : ठिक अच्छि छिअ । उगवान  
तेर मञ्जल करन्हू  
जीवनर यनु परीक्षारे  
तुमकु सप्तक्ता मिलिब ।

होस्टल जाओगी तो हमारी पोती  
जानकी से मुलाकात कर लेना, यदि  
समय मिला, तो ।

सुजाता : जरुर नानाजी । आप जो कहेंगे वह  
मैं करूँगी । क्या अब मैं जा सकती  
हूँ?

नाना : हाँ, ठीक है बेटी, भगवान तुम्हारा  
भला करे । जीवन की सभी परीक्षाओं  
में तुम्हें सफलता मिले ।

## शब्दार्थ

### ओडिआ शब्द

अजा

मात्सुणी

चकिरी

तुतु प्रूचिबा उलि

येतेवेले

### हिंदी अर्थ

नाना

मास्टरनी, अध्यापिका

नौकरी

छत्रक की भाँति,  
कुकुरमुते की भाँति

जिस समय, जब

ସେତେବେଳେ	उସ ସମୟ, ତବ
ସେଉଁଠି	ଜହାଁ
ସେଠି	ବହାଁ
ସେତେ	ଜିତନା
ସେତେ	ଉତନା
ସେବେ	ଜବ
ସେବେ	ତବ
ଦରମା	ବେତନ
ପଢ଼ିଲୁ	ପହଲା
ଆରମ୍ଭ	ଶୁରୁ, ଆରଂଭ
ମନ୍ଦିରାଭବା	ମହିଂଗାର୍ଡ ଭତ୍ତା
ପରା	କି
ସେତେଦୂର	ଜହାଁ ତକ
ଏକମତ	ସହମତ
ପରିବେଶ	ବାତାଵରଣ
ଦେଖା କରିବା	ମୁଲାକାତ କରନା
ଜୀବନରେ	ଜୀବନମେ
ସବୁ ପରୀକ୍ଷାରେ	ସବ ପରୀକ୍ଷାଓମେ
ସଫଳତା	ସଫଲତା

### ଅଭ୍ୟାସ

#### ଅଭ୍ୟାସ

- I. 1) ନିମ୍ନରେ ଦିଆଯାଇଥିବା ବାକ୍ୟ ଅଭ୍ୟାସ କରନ୍ତୁ ।  
(ନୀଚେ ଦିଏ ଗାଁ ବାକ୍ୟ ଦୋହରାଇଏ ।)
1. ଯଦି ଚାକିରୀ କରି ପରୀକ୍ଷା ଦେଲି, ତେବେ କ'ଣ କିଛି ଖରାପ ହେଲା ?
  2. ଯଦି ସେ ଯିବ ତେବେ ମୁଁ ଯିବି ନାହିଁ ।
  3. ଯଦି ସେ ଯିବ, ତେବେ ମୁଁ ଯିବି ।

4. આમે યેતેબેલે પદ્ધુથિલુ, એટેબેલે એઠારે માત્ર ગોટિએ કલેજ થિલા ।
5. યેતેબેલે યાહા કરિબા કથા એટેબેલે તાહા કર ।
6. તુમે યેતેબેલે તાકિબ મું નિશ્ચય યિબિ ।
7. આજિ યેજીંઠ બિશ્વબિદ્યાલયુ, કાલિ એકઠિ જણલ થિલા ।
8. તુમે યેજીંઠિ યાઉછુ, મું એકઠિ યાઉછુ ।
9. યેજીંઠ જાનકી રહ્યુછુ, એકઠિ મું મધ્ય રહ્યુછુ ।
10. આજિ યેતે ઝીઅ પદ્ધુરહ્નુ, એટેબેલે એતે પદ્ધુનથિલે ।
11. યેમિટિ ઠાકુર યેમિટિ પૂજા ।
12. યેમિટિ પાઠ પઢિરુ યેમિટિ ફળ પાઇરુ ।
13. આજિ યેતે પલસા પાઇલે બિ યેતે નિઅણુ ।
14. આપણ કહ્યિલે પરા પચાણ ટંકારે આપણ તાકિરી કરિથિલે ।
15. મું યેતે જાગા રૂલિછુ, એતે જાગા કેહ્યિ રૂલિ નાહાન્નુ ।
16. દેખ, કથા કથારે સમય ચાલિગલા ।
17. દેખ, મનજા મનજારે દિન કટિગલા ।
18. દેખ, હૃદ હૃદરે કામ સરિગલા ।

**II.** બન્ધની મધ્યરૂ ઉપયુક્ત સંગ્રહિત પદ બાબુ શૂન્ય પ્રાન પૂરણ કરન્નુ ।  
(કોષ્ટક મેં દિએ ગાએ ઉપયુક્ત સંયોજક અવ્યય શબ્દ ચૂનકર વાક્ય પૂરે કીજિએ ।)

(યેજીં..... એજ, યેતેબેલે.....એટેબેલે, યેતે.....એતે, યે.....એ, યદિ)

1. તુમે \_\_\_\_\_ શાઢીટિ કિણિથિલ, \_\_\_\_\_ ટિ હૃદ્ય યાઉછુ ।
2. આજિ \_\_\_\_\_ રાજેન્દ્ર, કાલિ \_\_\_\_\_ ફંકીર ।
3. તુમે \_\_\_\_\_ તાકુથિલ, એ \_\_\_\_\_ શોઇથિલા ।
4. એ \_\_\_\_\_ આધિથાન્ત્રા, મોટે યાહાય્ય કરિથાન્ત્રા ।
5. રાટિ \_\_\_\_\_ બજુછુ, બર્ષા \_\_\_\_\_ બજુછુ ।

**III.** બન્ધનીરે દિઅ યાઉથિબા હૃદ્યી સંગ્રહિત પદર સમાનાર્થક ઓઢિઅ સંગ્રહિત દ્વારા શૂન્ય પ્રાન પૂરણ કર ।  
(કોષ્ટક મેં દિએ ગાએ હિંદી સંયોજક અવ્યય શબ્દો કે સમાનાર્થક ઓડિઅ સંયોજક અવ્યય શબ્દો કે દ્વારા વાક્ય પૂરે કીજિએ ।)

1. आपशं \_\_\_\_\_ आसिबे, मूँ \_\_\_\_\_ यिबि । (यदि.... तो)
2. मूँ \_\_\_\_\_ पहुँचिल \_\_\_\_\_ बर्षा ह्रेउथिला । (जब..... तब)
3. आन्दि \_\_\_\_\_ सहर देखुछु, ऐ दिन \_\_\_\_\_ छङ्गल थिला । (यहाँ.... वहाँ)
4. माउसी कहिले \_\_\_\_\_ ऐ मोलाकु यिबे नाहुँ । (कि)
5. कवि \_\_\_\_\_, \_\_\_\_\_ निश्चय उच्चप्रबण ।

(जिन्हाने....उन्होने)

**IV.** 'क' सुमूर बाक्यशब्द सह 'ख' सुमूर उपस्थुक्त बाक्यशब्द योग करि पूर्ण बाक्य गठन करनु ।

('क' स्तंभ के वाक्यखंड के साथ 'ख' स्तंभ के उपयुक्त वाक्यखंड जोड़ कर पूर्ण वाक्य बनाइए ।)

(क)

पठाशा टङ्कारे मोर  
पिलामाने सबुदेले टूप्यसन्  
ऐबे आमे येते  
चिउसन् हुँ शिक्षाकु

(ख)

उपरे निर्भर करुहुन्ति ।  
मञ्जल करनु ।  
ब्यवसायीक करिदेला ।  
पहिलू चाकिरी आरम् ह्रेउथिला ।

उगवान त्रुमर

पाइले वि येते निअछु ।

**V.** उदाहरण अनुसारे निम्नलिखित बाक्य गुड़िकु परिवर्तन करनु ।

(उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों का परिवर्तन कीजिए ।)

उदाहरण :- हृष्णेलकु गले जानकीकु देखा करूनु । (यदि)

यदि हृष्णेलकु याउ त जानकीकु देखा करिनु ।

1. त्रुमे उकिथाआन्ति मूँ आसिथान्ति । (यदि)

2. त्रुमे आसिब मोते देखा करिब । (येबे)

3. ताकु भोक करिथाआन्ता ऐ याइथाआन्ता । (यदि ..... तेबे)

4. मूँ चिठि देबि त्रुमे आसिब । (येबे.....येबे)

5. त्रुमे याइथाआन्ति मूँ वि याइथाआन्ति । (यदि .... तेबे)

**VI.** उदाहरण अनुयायी दिआ याइथिबा बाक्य गुड़िकु नाहिंचाचक बाक्यरे परिणत करनु ।

(उदाहरण के अनुसार दिए गए वाक्यों के निषेधवाचक वाक्य बनाइए ।)

उदाहरण :- तु यदि किंक पार, तेवे ताकू देखा करिबू ।  
 तु यदि किंक पार, तेवे ताकू देखा करिबू नाहीं ।  
 तु यदि किंक नयार, तेवे ताकू देखा करिबू नाहीं ।

1. यदि तुमे शेळ देखि यिब, तेवे मुँ यिबि ।
  2. तुमे यदि आसिब मो बहु शास्त्रिक आशिब ।
  3. मोते यदि भोक करुथाआन्हा, तेवे मुँ शारुथाआन्हा ।
  4. यदि उगजित् मन उल थाआन्हा, तेवे से आसिथाआन्हा ।
  5. यदि तु रेतेन्हा कलेज यिबू, तेवे जानकीकू देखा करिबू ।
- VII.** उदाहरण अनुपाया दिआ याइथिबा नास्त्रिबाचक बाक्यकू अस्त्रिबाचक बाक्यरे परिणत करन्हू ।  
 (उदाहरण के अनुसार दिए गए नकरात्मक वाक्यों को सकरात्मक वाक्यों में परिवर्तन कीजिए ।)

उदाहरण :- आजि येउँठ घर देखूच्छ, येतेबेले येठि घर नथिला ।  
 आजि येउँठ घर देखूच्छ येतेबेले येठि घर थिला ।

1. येतेबेले मुँ ताङ्गु उकिलि, येतेबेले से आसिले नाहीं ।
2. तुमे येउँठकि याअ, मोर अनुमति नेबा दरकार नाहीं ।
3. यदि से यिब, तेवे मुँ यिबि नाहीं ।
4. तुमे यदि यिब, येवे मो ०१२० चिठि नेब नाहीं ।
5. तु येते शारुबू, मुँ येते देल पारिबि नाहीं ।

- VIII.** उदाहरण अनुपाया दिआ याइथिबा प्रत्येक बाक्यकू अलगा अलगा बाक्यरे परिणत करन्हू ।  
 (उदाहरण के अनुसार दिए गए प्रत्येक वाक्य को अलग अलग वाक्यों में परिवर्तन कीजिए ।)

उदाहरण :- येतेबेले मुँ पछुथिलि, येतेबेले गोटिए कलेज थिला ।

- 1- मुँ पछुथिलि ।
- 2- गोटिए कलेज थिला ।

1. आजि येउँठ बिश्वविद्यालय अच्छि येदिन येठि उज्ज्ञल थिला ।
2. आजि येते रिअ पछुचून्हि, येतेबेले एते पछुनथिले ।

3. ए येउँटि रहूँहि मुँ मध्ये रहूँहि ।
4. तुमे कहिल परा पठाण ठंकारे तुमे चाकिरा करिथिल ।
5. यदि तुमे मनप्राण देइ उगवानंकु प्रार्थना कर तेबे निश्चय तुमर दृष्ट दूर हैब ।
6. येउँ छात्रमाने परिश्रम करन्ति, येमाने पराक्षारे कृतकार्ये होइथाआन्ति ।
7. ये सरुबेळे न्यायपथरे आआन्ति, ये सर्वदा उगवानंक कृपा लाभ करन्ति ।
8. बंशरे यदि केहि नाहाँन्ति, तेबे ये संपत्तिर कि प्रयोजन ?
9. यदि चाकिरा करि पराक्षा देलि, तेबे क'ण किहि खराप हैला ?
10. येउँमाने पाठ पढाउथिले, येमाने शिक्षादानकु परित्र कर्त्तव्य बोलि भाबुथिले ।

**पढ़न्तु ओ बुझन्तु**

**केदार गोरा**

**केदार गौरी**

येतेबेळे भुवनेश्वर उज्ज्वल थिला येतेबेळे एउ घटणा घटिला । लिङ्गराज मन्दिरर अनंति दूररे उणे योदागर बाष करुथिले । ताङ्कर गोटिए बोलि अलिअल झिअ थिला । झिअति अनिय पूष्यरा थिला । यते येमिति गोटिए चाउलरे गढा । बापा मा' आदररे नाँ देइथिले गोरा । येउँटि गोरा रहूथिला येइटि एक सून्दर परिवेश थिला ।

पाण गाँरे चाषाटिए थिला । स्वामी स्वी दुहेँ मिशि क्षेत्रे काम करुथिले ओ पेट पोषुथिले । दुहेँ केते दिअ देवताङ्कु पूजा करिकरि पूअटिए पाइथिले । यते येमिति रजायर कुमर । नाँ ता'र केदार थिला । यि येते येहि पाउथिला येते आदर मध्य पाउथिला । ये थिला बापामाआजर नस्तुनर पितूला ।

धारे धारे समय गढि चालिला । पिला दुरिटि बढ़ होइ योबनरे पाद देले । येतेबेळे केदार लिङ्गराज मन्दिरकु याउथिला येतेबेळे गोरा मध्य लिङ्गराजङ्कु दर्शन करिबाकु आसुथिला । धारे धारे प्रतेयक प्रतेयकर रूप लाबण्यरे आकर्षित हैले । हैले येबे येमाने कथा हैबापाइँ चाहुँथिले

ତେବେ ତାଙ୍କୁ ସୁଯୋଗ ମିଳୁନଥିଲା ।

ସେଦିନ ଲିଙ୍ଗରାଜଙ୍କ ଜାଗର ଯାତ୍ରା ଥିଲା । ଲୋକ ଗହଳି ଉଚିତରେ କେଦାର ଓ ଗୌରୀ ଦୁହିଁଙ୍କର ଭେଟ ହେଲା । ସେଇଠି ଏକ ନିକାଞ୍ଚନ ସ୍ଥାନ ସ୍ଥିର କଲେ ଯେଉଁଠି ସେମାନେ ମନଖୋଲି କଥା ପଦେ ହୋଇପାରିବେ । ମନ୍ଦିରର ଅନତି ଦୂରରେ ଯେଉଁଠି ଗରୁଲତା ପୂର୍ଣ୍ଣ ଏକ ସ୍ଥାନ ସେଇଠି ଏକ ଜଳାଶୟ ମଧ୍ୟ ଥିଲା, ତାହା ଥିଲା ଉଭୟଙ୍କ ମିଳନସ୍ଥଳୀ ।

ସେଦିନର ସଞ୍ଚ ନଈଁ ଆସିଥିଲା । ଉକ୍ତଶ୍ଶିତ କେଦାର ଗୌରୀର ସାକ୍ଷାତ୍ ପାଇଁ ଧାଇଁ ଧାଇଁ ଆସିଥିଲା ସେଇ ନିବିଡ଼ ଲତା କୁଞ୍ଜକୁ । ସେଇଠି ହୃଦୀ ଦେହ ତା'ର ଶିରୀରୀ ଉଠିଲା । କାରଣ ସେତେବେଳେ ସେ ଦେଖିଲା ବାଘଟାଏ ଚାଲି ଯାଉଛି ଜଙ୍ଗଲ ଉଚିତରକୁ । ଏକ ଅହେତୁକୀ ଆଶଙ୍କାରେ ହୃଦୟ ତା'ର ଥରି ଉଠିଲା । ନିରୂପିତ ମଧୁମାଳତୀ କୁଞ୍ଜ ଆଡ଼େ ଆଗେଇ ଯାଉଯାଉ ଗୋଡ଼ ତା'ର ଥରି ଯାଉଥିଲା । ଏ କ'ଣ ? ରକ୍ତଭିଜା ଲୁଗା, ରକ୍ତ ବୋଲା ମାସଂ ଖଣ୍ଡ । ତା' ଚିର ଆକାଂକ୍ଷିତା ଗୌରୀ କ'ଣ ତେବେ ତା' ପାଇଁ ବାଘ ମୁହଁରେ ଜୀବନ ଦେଇଦେଲା ? ଚଉଦିଗ ଅନ୍ଧାର ଦେଖାଗଲା କେବାରକୁ । ଆଉ ଏ ବୃଥା ଜୀବନ ରଖି ଲାଭ କ'ଣ ? ଶେଷରେ ସେଇ ଗଭୀର ଜଳାଶୟକୁ ଢେଇଁ ପଡ଼ିଲା । ଜୀବନ ଦୀପ ତା'ର ଲିଭିଗଲା ।

ଠିକ୍ ସେତିକିବେଳକୁ ଗୌରୀ ଘରକାମ ସାରି ଆୟୁ ଆୟୁ ଟିକେ ତେରି ହୋଇଗଲା । ମରିରେ ପାଖ ଜଙ୍ଗଲରୁ ବାଘର ଗର୍ଜନ ଶୁଭୁଥିଲା । ସେଥିକି ଖାତିର ନାହିଁ ତା'ର । ଉନ୍ନନା ଗୌରୀ ଆଗେଇଗଲା ସେଇ ଲତା କୁଞ୍ଜ ଆଡ଼େ । ହୃଦୀ ସେ ଚମକି ଉଠିଲା । ଉପ୍ରେର ସେ ହତ୍ତବାକ୍ ହୋଇଗଲା । ରକ୍ତ ଭିଜା ଲୁଗା, ରକ୍ତବୋଲା ତାଜା ମାସ । ତାହେଲେ କ'ଣ କେଦାର ଆଉ ନାହିଁ ? ତା'ରି ପାଇଁ ସେ ବାଘ ମୁହଁରେ ଜୀବନ ଦେଇଦେଲା । ଯେତେବେଳେ ଏଇ ଘଟଣା ଦେଖିଲା ସେ ଭାବିଲା ସେତେବେଳେ ଆଉ ଏ ଜୀବନ ରଖି ଲାଭ କ'ଣ ? ଯେମିତି କେଦାର ଜଳାଶୟ ଉଚିତରକୁ ଢେଇଁ ପଡ଼ିଥିଲା ସେମିତି ପାଗଳିନୀ ଗୌରୀ ଜଳାଶୟ ଉଚିତରକୁ ଢେଇଁ ପଡ଼ିଲା ।

ଚାରିଆଡ଼େ ରାତ୍ରୀର ଅନ୍ଧକାର ଘନେଇ ଆସିଲା । ତାରୁଣ୍ୟର ଦୁଇଟି କଳିକା ଅସମୟରେ ଝରି ପଡ଼ିଲେ ମହା ମିଳନର ଅସରନ୍ତି ପଥରେ ।

କେଦାର ଗୌରୀର ଏଇ ଅମର ପ୍ରେମ କାହାଣୀର ମୁକସାକୀ ଆଜି କେଦାର ଗୌରୀ ପୋଖରୀ ଓ କେଦାର ଗୌରୀ ମନ୍ଦିର । ଆଜି ବି ଏଇ ପୁଣ୍ୟତୋଯ୍ୟ, ସୁଲ୍ଲ ସଲୀଲା କେଦାର ଗୌରୀ ପୁଷ୍ପରିଣୀରେ ଗାଧୋଇଲେ ଅଭିଲାଷ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବାର ଲୋକ ବିଶ୍ୱାସ ଅଛି । ଅମୃତ ପ୍ରେମର ମୁର୍ମିମନ୍ତ୍ର ପ୍ରତୀକ, ଧନ୍ୟ ତୁମେ କେଦାର ! ଧନ୍ୟ ତୁମେ ଗୌରୀ !

## शब्दार्थ

ओडिआ शब्द	हिंदी अर्थ
ଅନ୍ତି ପୂର	समीप
ଦୋଧାଗର	सौଦାଗର
ଅଲିଆଳ	अति प्रिय, ଲାଙ୍ଘଲା
ଅନିନ୍ଦ୍ୟ ସୁନ୍ଦରୀ	ପରମ ସୁନ୍ଦର, ଅନିନ୍ଦ୍ୟ ସୁନ୍ଦର
ଗୋଟିଏ ଚାଉକରେ ଗଡ଼ା	ଚାଵଲ ଦାନେ କୀ ତରହ ସୁଗଢ (ମୁହାଵରା) ଅତ୍ୟଂତ ସୁନ୍ଦର
ପେଟ ପୋଷିବା	ଜୀବନ ଯାପନ, ପେଟ-ପାଲନ
ଦିଅଁ ଦେବତା	ଦେଵ-ଦେଵତା
ରଜାଘର କୁମର	(ମୁହାଵରା) ରାଜ କୁମାର କେ ସମାନ ସୁନ୍ଦର
ନୟନର ପିତୁଳା	(ମୁହାଵରା) ଆଖୋଂ କା ତାରା, ଆଁଖୋଂ କା ପୁତଳା
୦କୁର	ଦେଵତା, ଠାକୁର
ଜାଗର ଯାତ୍ରା	ଜାଗର ଯାତ୍ରା
ଗଢ଼ଳି	ଭୀଡ଼, ରେଲା, ରେଲ-ପେଲ
ମନଖୋଲି କହିବା	ଉନ୍ମୁକ୍ତ ଅଭିଵ୍ୟକ୍ତି
ନିକାଞ୍ଚନ	ଏକାଂତ
ନିବିଡ଼	ନିବିଡ଼, ଘନା
ବନାନୀ	ବନ, ଜଂଗଲ
ମଦି	କେଂଦ୍ର, ମଧ୍ୟ
ଜଳାଶୟ	ତାଲାବ, ଜଳାଶୟ
ନିରୂପିତ	ପହଲେ ସେ ସ୍ଥିରିକୃତ ସ୍ଥାନ
ମିଳନପୁଲୀ	ମିଳନ ରଥଳ
ଲତାକୁଣ୍ଡା	ଲତା-କୁଂଜ
ଦୂରାତ୍	ତତ୍କାଳ, ତୁରଂତ, ଅଚାନକ

ଶିରୁରି ଉଠିଲା	ସିହର ଉଠା
ଆହେତୁକୀ ଆଶିଙ୍କା	ଅକାରଣ ଭୟ
ଥରି ଉଠିଲା	କାଁପନେ ଲଗା, ଥର୍ରାୟା, ଥର୍ରା ଉଠା
ମଧୁମାଳଚୀ	ମଧୁମାଲତୀ (ଲତା)
ଅଟକିଗଲା	ରୁକ ଗ୍ୟା, ଅଟକ ଗ୍ୟା
ରକୁଛିଦା ଲୁଗା	ରକ୍ତ ସେ ଭୀଗା ଵସ୍ତ୍ର
ମାଂସ ଖଣ୍ଡ	ମାଂସ କା ଟୁକଡ଼ା
ଚିର	ଚିର, ସଦୈଵ
ଆକାଂକ୍ଷିତା	ଇଚ୍ଛା
ଚଉଦିଶ	ଚାରଁ ଓର
ଗଢିର	ଗହରା
ଲେଖଦେବା	କୂଦନା
ଖାତିର	ଖାତିର
ଉନ୍ନନ୍ଦା	ବାଵଲା
ଚମକି ଉଠିଲା	ଚମକ ଉଠା
ପ୍ରତ୍ଯବାକ୍	ଅଵାକ, ସ୍ତବ୍ଧ
ମୁହଁ	ମୁଖ
ପାଗଳିନୀ	ପଗଲୀ
ଅନ୍ଧକାର	ଅଂଧକାର
ତାରୁଣ୍ୟ	ତାରୁଣ୍ୟ, କିଶୋରତା
କଳିକା	କଳୀ
ଝରି ପଡ଼ିବା	ମର ଗଏ
ମୂଳ ସାକ୍ଷୀ	ମୂଳ ଦର୍ଶକ
ପୂଣ୍ୟତୋଯ୍ୟ	ପଵିତ୍ର ଜଳ (ଵାଲୀ)
ସୁଲ୍ଲ ସଲିଲା	ସ୍ଵଚ୍ଛ ଜଳ (ଵାଲୀ)
ପୁଷ୍ପରିଣୀ	ତାଲାବ
ଅଭିଲାଷ	ଅଭିଲାଷା

प्रवाद	प्रवाद, उक्ति, जनश्रुति
मूर्खमनु	जीवित रूप, जीता-जागता
प्रतीक	

### अभ्यास

#### अथृपाए

I. अनुच्छेद आधार उपरे निम्नरे विआपाइथिबा प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. घोदागर केरौंटि बाए करुथिले ?
2. घोदागरङ्क हैथर नाम क'ण ?
3. पूथिटि देखिबाकु केमिटि ?
4. केउँ दिन गोरी सहू केदारर कथावार्हा द्वेला ?
5. केदारर देहु काहूँकि शिहूरी उठिला ?
6. गोरीर ढेरिरे आसिबार कारण क'ण ?
7. गोरी काहूँकि हृत्वाक होउगला ?
8. केदार गोरीङ्क अमर प्रेमर मूक साक्षा किए ?

II. पठित विषय अबलम्बनरे दिआ पाइथिबा बाक्य गुढ़िकर क्रमानुसारे बाक्यगुड़िकु लेखनु।

(नीचे दिए गए कथनों को उसी क्रम में क्रमबद्ध कीजिए जिस क्रम में उन का वर्णन अनुच्छेद में किया गया है।)

1. हैथिटि अनिष्ट्य सुन्नरी।
2. केते दिअँ देबताङ्कु पूजा करिकरि पूथिए पाइछुन्ति।
3. प्रत्येक प्रत्येकर रूप लाबण्यरे आकर्षित हूआन्ति।
4. हृत्वा देहु तार शिहूरी उठिला।
5. उपूरे से हृत्वाक होउगला।
6. रात्रीर अष्टकार घनेइ आसिला।

7. ଏଇ ଅମର ପ୍ରେମ କାହାଣୀର ମୁକସାନ୍ଧୀ କେଦାର ଗୌରୀ ମନ୍ଦିର ।
8. ଯେତେବେଳେ କେଦାର ଲିଙ୍ଗରାଜ ମନ୍ଦିରକୁ ଯାଉଥିଲା ସେତେବେଳେ ଗୌରୀ ମଧ୍ୟ ଲିଙ୍ଗରାଜଙ୍କୁ ଦର୍ଶନ କରିବାକୁ ଆସୁଥିଲା ।
9. ସେଇଠି ନିକାଞ୍ଚନ ପ୍ଲାନ ପ୍ଲିର କଲେ ଯେଉଁଠି ସେମାନେ ମନଖୋଲି କଥାପଦେ ହୋଇପାରିବେ ।
10. ସିଏ ସେତେ ସ୍ନେହ ପାଉଥିଲା ସେତେ ଆଦର ମଧ୍ୟ ପାଉଥିଲା ।

### **III. ହିନ୍ଦୀର ଅନୁବାଦ କରନ୍ତୁ । (ହିନ୍ଦୀ ମେ ଅନୁବାଦ କରିଜାଇ ।)**

ଏକ ସମୟରେ ଭାରତରେ ଯୁକ୍ତ ପରିବାର ଥିଲା । ଏହି ପରିବାର ମାନଙ୍କରେ ଦୂଇ ତିନି ପିତ୍ରୀର ଲୋକେ ଏକାଠି ରହୁଥିଲେ । ଏହା ଫଳରେ ଉନ୍ନତାରୁ ମରଣୟାଏଁ ପ୍ରତ୍ୟେକ ଲୋକ ପରିବାରର ସମର୍ଥନ ପାଉଥିଲେ । କ୍ରମେ ଏହି ଯୁକ୍ତ ପରିବାର ଭାଙ୍ଗି ଏକକ ପରିବାର ସୃଷ୍ଟି ହେଲା । ଏହି ପରିବାରରେ ବାପା ବୋଉ ଓ ପିଲାମାନେ ସଭ୍ୟ ଥିଲେ । ଆଶ କାଳରେ ଗଞ୍ଜ ଉଚିଆରେ ପାରିବାରିକ ମୂଲ୍ୟବୋଧ ବଯୋଜେୟଷ୍ଟ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କଠାରୁ ଆସୁଥିଲା । ସମସ୍ତେ ଭିନ୍ନ ହୋଇଯିବାରୁ

ବୁଡ଼ାବୁଡ଼ୀଙ୍କ ଦୁର୍ଘାଟ ବଢ଼ିଗଲା ପିଲାଙ୍କର ସାମାଜିକକରଣ ମଧ୍ୟ ବାଧା ପାଇଲା । ଗଞ୍ଜ କର୍ତ୍ତିବାର ଧାରା ପରିବାରରେ ବନ୍ଦ ହୋଇଯିବାରୁ ନୂଆ ପିତ୍ରୀର ଲୋକେ ଏଥିପାଇଁ ସ୍ଵଲ୍ପ ନିର୍ଭର ହୋଇଗଲେ ।

ଆଶେ ପର୍ବପର୍ବାଣୀ ମାନଙ୍କରେ ବହୁତ ପ୍ରକାରର ପିଠା ଓ ଖଜା କରାଯାଉଥିଲା । ସେତେବେଳେ ଘରେ ଖାଇବା ଭୋଜିପରି ଲାଗୁଥିଲା । ସବୁ ପର୍ବ ପର୍ବାଣୀରେ ପ୍ରସାଦ ବଣ୍ଣାପାଉଥିଲା । ଏଥିରେ ଜାତି ଭେଦର ବିଚାର ନଥିଲା । ପର୍ବ ପର୍ବାଣୀରେ ସାନ ପିଲାମାନେ ବଡ଼ ମାନଙ୍କଠାରୁ ଯାତ୍ରା ପଇସା ନେଉଥିଲେ । ସେମାନେ ଯାତ୍ରା କିମ୍ବା ମେଳା ପଡ଼ିଆକୁ ଯାଇ ଏହି ପଇସାରେ ଖାଇପିଆ କରୁଥିଲେ ଓ ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରକାରର ଛୋଟ ଛୋଟ ଖେଳଣମାନ କିଣୁଥିଲେ । କେବେକେବେ ଯାତ୍ରା ପଡ଼ିଆରେ ବାଣ ଫୁଟାଯାଉଥିଲା । ଏହା ଦେଖିବାକୁ ବଡ଼ସାନ ସମସ୍ତେ ଯାତ୍ରା ପଡ଼ିଆକୁ ଯାଉଥିଲେ ।

ସୁର୍ଯ୍ୟବାନ୍ଧବ ଭାରତୀୟ ପରିବାର ବିସ୍ତାରର ଅନ୍ୟ ଏକ ଦିଗନ୍ତ । ତେଲି, କେଉଟ, ଗୁଡ଼ିଆ, ଗରଡ଼ ଯେଉଁ ଜାତିର ଲୋକ ହୁଅନ୍ତାନା କାହିଁକି 'ମହାପ୍ରସାଦ' ଦେଇ ବଡ଼ଘରର ଝିଅ ବୋହୁଙ୍କ ସାଙ୍ଗରେ ସମୁନ୍ଦ ବାନ୍ଧୁଥିଲେ । ସଙ୍ଗାତ, ମୌତ୍, ତୁଳସୀ, ଦଅଣା, ବଡ଼ଳ ବସିବା

घेन्हिपरि बढ़न्तु परिवारर आउ एक लक्षण। एजस्त्रू बिछिन्न जातिकू एकाठि बान्धि रहिथिला।

#### IV. उडिथारे थनूबाद करन्तु। (ओडिशा में अनुवाद कीजिए।)

अनपढ़ व्यक्ति अंधे के समान हैं। जब तक पढ़ाई का प्रसार नहीं होगा तब तक दूर गाँव के लोग अनपढ़ रहेंगे। विश्वविद्यालय के छात्रों को गाँव-गाँव जाकर शिक्षा का प्रसार करना होगा। जबतक वे अपना दायित्व नहीं समझेंगे तब तक देश का कल्याण नहीं होगा।

जहाँ अनपढ़ का राज होता है वहाँ गरीबों का शोषण होता है। जो लोग राज करते हैं वे गरीबों की प्रगती के बारे में सिर्फ बोलते हैं। लेकिन कुछ करते नहीं। हमारा देश जितना बड़ा है उतना बड़ा है हमारा बोझ भी। गरीबी हटाने केलिए हम जितनी भी कोशिश करें उतनी कम ही रहेगी। इसलिए हम को चाहिए कि देश के कोने कोने में जो रहनेवाले हैं वे सब शिक्षित बनें। तब उन की शोषण करना आसान नहीं हो सकता। वे अपने अधिकारों तथा उत्तरदायित्व समझ भी सकेंगे। जिस राज्य के लोग अपने उत्तरदायित्व समझनेवाले हैं उस राज्य की उन्नति सुनिश्चित है।

#### टिप्पणियाँ

##### I. निम्न वाक्यों पर ध्यान दिजिए।

- (1) 1. आमे घेतेबेले पछूथिलू,  
घेतेबेले एठारे मात्र गोटिए  
रेभेन्सा कलेज थिला।
- हम जब पढ़ते थे, तब यहाँ रेभेन्सा कॉलेज  
एक ही कॉलेज था।

आमे जेतेबेळे पढ़ुथिलु, सेतेबेळे एठारे  
मात्र गोटिए रेभेन्सा कलेज थिला।

2. आपश घेबे ढाकिरा करियिले,  
घेबे दरमा केते थिला ?  
आपण जेबे चाकिरी करिथिले,  
सेबे दरमा केते थिला ?
- जब आप नौकरी करते थे तब वेतन  
कितना था ?
3. घेतेबेले घेउमाने पाठ  
पढ़ाउथिले घेमाने शिक्षादानकू  
कर्द्दब्बृ पोलि भाबूथिले।
- उस समय जो शिक्षा देते थे वे शिक्षण  
को पवित्र कर्तव्य समझते थे।

सेतेबेळे जेउँमाने पाठ पढाउथिले सेमाने  
शिक्षादानकु कर्तव्य बोलि भावुथिले ।

4. आजि घेउँठे ढुमा विश्वविद्यालय,  
घेठे गोटाए छड्कल थिला ।  
आजि जेउँठि तुम विश्वविद्यालय,  
सेठि गोटाए जंगल थिला ।

आज जहाँ तुम्हारा विश्वविद्यालय है,  
वहाँ एक जंगल था ।

5. आजि घेते दैथ पछुछुन्ने,  
घेतेबेले घेते दैथ पछुनथेले । आज जितनी लड़कियाँ पढ़ रही हैं,  
आजि जेते झिअ पढुछन्ति,  
सेतेबेले सेते झिअ पढुनथिले । तब उतनी लड़कियाँ नहीं पढ़ती थीं ।

6. मूँ घेपर्ष्यन्नु नकहिट्टि, घेपर्ष्यन्नु ढुमे जब तक मैं नहीं बोलूगां तब तक उसके  
ठाङ्क विश्वविद्यालय किट्टि पठारिव नाहिँ । बारे में तुम कुछ नहीं पूछेगी ।  
मुँ जेपर्ज्यन्त नकहिछि, सेपर्ज्यन्त तुमे  
तांक विषयरे किछि पचारिब नाहिँ ।

2) 1. आपश कहिले पठा पठाश ठड्कारे  
आपश ठाकिरा करिथिले । आपने कहा कि पचास रूपए में आप  
ने नौकरी शुरू की थी ।

आपण कहिले परा पचाश टंकारे  
आपण चाकिरी करिथिले ।

2. આપણ કદ્રિય કિ પચાશ ટંકારે  
આપણ ચાકિયા કરિથિલે ।  
આપણ કહિલે કિ પચાશ ટંકારે  
આપણ ચાકિરી કરિથિલે ।

उपर्युक्त वाक्यों के रेखांकित शब्दयुग्म हिंदी के 'जब-तब', 'जबतक-तबतक', 'जहाँ-वहाँ', 'जितनी-उतनी', जो-वे के समान हैं। ये सहसंबंध सूचक शब्द हैं। उपर्युक्त वाक्यों में इन शब्द युग्मों से दो दो वाक्यों का संयोजन किया गया है। ये सहसंबंध सूचक शब्दयुग्म क्रिया होने/ करने का समय, जगह, परिमाण आदि का बोध कराते हैं।

ऊपर (2) के इन वाक्यों के रेखांकित शब्द 'परा' (परा) तथा 'कि' (कि) अव्यय का प्रयोग हिन्दी के 'कि' के समान हैं। इन अव्ययों का प्रकार्य, हिन्दी की तरह किसी का कथन, सोच, भावना,

अनुभव, राय आदि, उद्धृत करना है। ऐसे वाक्यों में वक्ता का उल्लेख इस के पहले/बाद में हो सकता है।

- (3) 1. एमूङ्ग छूले मूँ पश्चिमा परे शिक्षि उ अगर संभव होगा तो मैं परीक्षा के बाद

छानु शाङ्गरे घेनि आशिकि । जाऊँगी और उसे साथ ले आऊँगी ।  
सम्भव हेले मुँ परीक्षा परे जिबि ओ  
ताकु सांगरे घेनि आसिबि ।

ऊपर के वाक्य में रेखांकित शब्द संयोजक 'उ' (ओ) के प्रयोग से दोनों वाक्यों को जोड़ कर एक संयुक्त वाक्य बनाया गया है। 'उ' (ओ), 'उथा' (तथा) के स्थान पर 'कि' (कि) भी संयोजक रूप में प्रयोग कर सकते हैं।

2. आजि शेहि कर्दूषप्रवाध नाहिौँ, किम्बा आज वह कर्तव्य बोध नहीं या कर्तव्यबोध कर्दूषप्रवाध शेहि शिक्षादानर परिवेश होते हुए भी शिक्षादान करने का वातावरण नाहिौँ। नहीं।

आजि सेहि कर्तव्यबोध नाहीं, किम्बा  
कर्तव्यबोध सत्त्वे शिक्षादानर परिवेश नाहिं।

ऊपर के वाक्य में 'किम्बा' (किंबा) शब्द वियोजक अव्यय शब्द है जो हिंदी के 'या' के समान है। 'किम्बा', (किंबा) के स्थान पर 'अथवा' (अथवा), 'नचेत्' (नचेत) आदि शब्दों का प्रयोग भी कर सकते हैं। ऐसे प्रयोग एक संयुक्त वाक्य में दो विकल्पों को दिखाते हैं।